



TM

# BASUNDHARA TEACHERS' TRAINING COLLEGE (A UNIT OF NORTH BIHAR EDUCATIONAL TRUST)

RECOGNISED BY NCTE-ERC, BHUBANESHWAR  
AFFILIATED B.R.A BIHAR UNIVERSITY, MUZAFFARPUR  
DR. U.S. ROY KNOWLEDGE PARK, SILOUT (NEAR MARKAN CHOWK) N.H. 28,  
MUZAFFARPUR (BIHAR) PIN-843119

## LIST OF BOOK / CHAPTER OUTER JACKET AND INDEXING

Sl.No.	Name of Author	Title	Journal/ Book names	Year	ISBN/ISSN No.
1.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	ध्यान एवं प्राणायाम का एम.एड. शिक्षाथिओ के शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ्य पर पर्ने वाला प्रभाव का अध्यन	IJMER	July 2022	ISSN:2277-7881
2.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	Changing Role of Teacher in 21 Century	IJMER	August 2022	ISSN:2277-7881
3.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	भारतीय सामाजिक और राजनैतिक स्थिति में महिलाओ की भूमिका	IJMER	August 2022	ISSN:2277-7881
4.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	शिक्षा के मूल्य प्रदान करने की दिशा में शिक्षण संस्थानों में शिक्षक छात्र संबंधो का विषय	IJMER	September 2022	ISSN:2277-7881
5.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	ICT IN EDUCATION : POSSIBELTY AND CHALLENGE	IJRPR	September 2022	ISSN2582-7421
6.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	ALOE VERA: A PLANT FOR MANY USE	IJRPR	September 2022	ISSN2582-7421
7.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	NEW EDUCATION POLICY 2020 Paradigm shift in education	IJNRD	APRIL 2023	ISSN:2456-4184
8.	Dr. Sheo Prakash Dwivedi	किशोरो की योगता की संवेगात्मक परिपक्ता पद अभिभावक बालक संबंधो के प्रभाव का अध्यन	शिक्षण संसोधन	NOVEMBER 2023	ISSN(o):2581-6241
9.	Dr. Rashmi Bala	ध्यान एवं प्राणायाम का एम.एड. शिक्षाथिओ के शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थ्य पर पर्ने वाला प्रभाव का अध्यन	IJMER	July 2022	ISSN:2277-7881
10.	Dr. Rashmi Bala	Changing Role of Teacher in 21 Century	IJMER	August 2022	ISSN:2277-7881

11.	Dr. Rashmi Bala	ICT IN EDUCATION : POSSIBELTY AND CHALLENGE	IJRPR	September 2022	ISSN2582-7421
12.	Dr. Rashmi Bala	ALOE VERA: A PLANT FOR MANY USE	IJRPR	September 2022	ISSN2582-7421
13.	Dr. Pratibha Kumari	शिक्षा के मूल्य प्रदान करने की दिशा में शिक्षण संस्थानों में शिक्षक छात्र संबंधों का विषय	IJMER	September 2022	ISSN:2277-7881
14.	Mr. Ajay Kumar Maurya	शहरी व ग्रामीण महिला शशक्तिकरण के प्रति द्विस्तिकों का अध्ययन	IJMER	August 2022	ISSN:2277-7881
15.	Mr. Ajay Kumar Maurya	वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता	शिक्षण संसोधन	NOVEMBER 2023	ISSN(o): 2581-6241
16.	Mrs. Kirti Saraswati	दर्शन विज्ञानों का विज्ञानं	AMRJ	May 2023	E-ISSN 2582-5429

  
**Principal**  
**Basundhara Teachers**  
**Training College, Sitout**  
**Muzaffarpur, Bihar**

  
**Coordinator**  
**IQAC**  
**BTTC, Muzaffarpur**



## ध्यान एवं प्राणायाम का एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन

**डॉ0शिव प्रकाश द्विवेदी**

प्राचार्य

बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज  
मुजफ्फरपुर बिहार

**डॉ0 रश्मि बाला**

सहायक प्राध्यापिका

बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज  
मुजफ्फरपुर बिहार

### एबैस्ट्रैक

मानव ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार माना जाता है। इस अनुपम उपहार की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का पावन कर्तव्य है। प्राणायाम अथवा योग वस्तुतः प्राचीन भारतीय अनुसंधान का परिणाम है। अतः योग साधना के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में न केवल वृद्धि किया जा सकता है वल्कि दीर्घजीवी जीवन अपनाया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य शारीरिक मानसिक भावनात्मक बौद्धिक, आध्यात्मिक सभी स्तरों पर व्यक्तित्व का विकास करना होता है। अर्थात् एक ऐसी साधना है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। छात्र जीवन में तो इसका सर्वाधिक महत्व है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मन पर नियंत्रण करना महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्तमान समय में अधिकांश छात्र-छात्राएँ आधुनिक सभ्यता चलचित्रों व दूरदर्शन तथा फैशन के घातक प्रभाव के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं अतः छात्र-छात्राओं के तनम न के संतुलित विकास के लिए योग शिक्षा अति आवश्यक है अतः इसके अभ्यास से शरीर एवं मन के समस्त विकार दूर हो जाते हैं। योग साधना के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकारों का शोधन, परिमार्जन एवं मार्गान्तीकरण स्वभाविक रूप से होता है। जिससे व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन्नतिशील होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में इसका अभाव है और परिणाम भी सामने है अनुसंधान की दृष्टि से योग साधना की प्रभाव शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर साकारात्मक रूप से पड़ता है। इसके द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकारों को दूर किया जा सकता है। शरीर और मन को स्वस्थ रखने। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि की अनुसरण किया। इसके अन्तर्गत दो समूह बनाये गये। 1- प्रयोगात्मक समूह 2- नियन्त्रित समूह मुजफ्फरपुर बिहार के एम0एड0 के 100 शिक्षार्थियों को अध्ययन हेतु यादृच्छित विधि चयनित किया गया। इसमें 50 शिक्षार्थी प्रयोगात्मक समूह और 50 शिक्षार्थियो नियन्त्रित समूह में सम्मिलित किये गये। उपकरण:-1- शारीरिक स्वास्थ्य परीक्षण माला स्वयं निर्मित 2- सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण डा0 के0 एस0 मिश्रा एवं डा0 एस0के0पाल 3- मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण डा0 अरुण कुमार सिंह, अल्पना सेन गुप्ता उद्देश्य:-1- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन 2- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। 3- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन परिकल्पना:-ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया में भाग लेने एवं भाग न लेने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणाम प्राप्त हुए। 1- ध्यान एवं प्राणायाम में भाग लेने एवं न लेने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अंतर पाया गया 2- दोनों समूहों के सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। 3- दोनों समूहों की एम0एड0 शिक्षार्थियों की स्वायत्तता में सार्थक अंतर पाया गया। 4- दोनों समूहों की सुरक्षा और असुरक्षा में सार्थक अंतर पाया गया। 5- दोनों समूहों के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया। 6- दोनों समूहों की बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर पाया गया। 7- दोनों समूहों के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया। 8- दोनों समूहों के सम्पूर्ण शारीरिक क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया करने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी पक्षों का विकास पूर्ण एवं अबोध गति से होता है। इस प्रकार ध्यान एवं प्राणायाम अच्छे शारीरिक एवं



**CHANGING ROLE OF TEACHER IN 21<sup>ST</sup> CENTURY****<sup>1</sup>Dr.Rashmibala and <sup>2</sup>Dr. Sheo Prakash Dwivedi**<sup>1</sup>Assistant Professor and <sup>2</sup>Principal<sup>1&2</sup>Basundhara Teachers' Training College

Muzaffarpur, Bihar, India

**ABSTRACTS**

In the information technology age, it can be hard to get a grip on the evolving roles of teachers. On one hand, it can seem as if the role of teachers has grown immensely; they are now expected to be tech-savvy, computer literate and at the cutting edge of education. On the other hand, it can seem as if technology makes the traditional role of the teacher largely obsolete. This, however, is not quite true; rather, teachers must keep their traditional devotion to students and hands-on interaction while teaching students how to navigate their 21<sup>st</sup> century world. Teaching in the 21<sup>st</sup> century has to require an emphasis on understanding how to use information technologies. Students always need mentors, both inside and outside of the classroom. Arguably, this is true of today more than ever before, as school violence, drug abuse and other dangers have been becoming more and more common. Teachers in the 21<sup>st</sup> century confront the challenges opened up by globalization. Effective teaching has to be fluid and adaptive to current culture. This requires an art and a science to teaching that makes the teacher of the 21<sup>st</sup> Century effective. The effective teacher will connect the art and science of teaching to make the learning environment relevant and applicable for her students. In the end, the teacher will thrive and the students will flourish when the role of the teacher adapts to the needs of culture of today.

**Keyword:** Teacher, Chang of Role, 21<sup>st</sup> Century.**Introduction**

“A poor teacher tells, An average teacher explains, A good teacher demonstrates, And a great teacher inspires.”

In the information technology age, it can be hard to get a grip on the evolving roles of teachers. On one hand, it can seem as if the role of teachers has grown immensely; they are now expected to be tech-savvy, computer literate and at the cutting edge of education. On the other hand, it can seem as if technology makes the traditional role of the teacher largely obsolete. This, however, is not quite true; rather, teachers must keep their traditional devotion to students and hands-on interaction while teaching students how to navigate their 21<sup>st</sup> century world.

**Emphasis on Technology**

- Teaching in the 21<sup>st</sup> century has to require an emphasis on understanding how to use information technologies. Teachers need to instruct students on computer usage, legitimate methods of Internet research, and how to identify useful information. Additionally, this focus on technology can open up a world of new resources to support traditional teaching methods, such as the incorporation of software programs in the classroom.

**Traditional Goals with New Resources**

- The traditional goals of education remain the same. Teachers want to help form their students into effective critical thinkers and life-long learners with a strong sense of their social responsibilities. While information technology can sometimes seem like a deterrent rather than an ally in reaching these goals, they can also be effectively employed to help facilitate rather than disrupt the learning process; for example, students can use social networking tools to construct opinion polls, or Internet search engines to conduct research.

**Emphasis on Techniques**

- Teachers in the 21<sup>st</sup> century have access to a host of cutting-edge research about how students learn. They should be knowledgeable and willing to apply such research to their classroom. They should understand different learning styles and be able to identify the learning styles of their students.

**As Mentors**

- Students always need mentors, both inside and outside of the classroom. Arguably, this is true of today more than ever before, as school violence, drug abuse and other dangers have been becoming more and more common. Teachers need to take their role as both a resource for students and as a guide through the difficulties of life seriously, and should strive to foster healthy relationships with their students.

**Emphasis on Action**

- Teachers in the 21<sup>st</sup> century confront the challenges opened up by globalization. Teachers should introduce students to their world, and moreover inculcate in them a sense of their own power to create change in the world. Teachers should not just transmit





## भारतीय सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में महिलाओं की भूमिका

शोधार्थी

श्रीमती अमृता भारती

प्रभात नगर रोड न0-01A

मकान न0 17 भगवानपुर मुजफ्फरपुर बिहार

डॉ0 एस0पी0 दिवेदी

शोध सपर्वेक्षक

प्राचार्य

बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

मुजफ्फरपुर बिहार

### शोध पत्र सारांश

प्रस्तुत लेख के तहत, भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन राजनीतिक दृष्टिकोण से किया गया है। इस शोध पत्र में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी, वर्तमान स्थिति, समस्याओं और महिलाओं के राजनीतिक भविष्य का अध्ययन किया गया है। वर्तमान राजनीति में महिलाओं की भागीदारी वैसी ही स्थिति नहीं है जैसी बीस साल पहले थी। दुनिया के इतिहास में राजनीति एक दुर्जेय कार्य रही है। राजनीति ने लोगों का शोषण किया है, धर्म की रक्षा और लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा के नाम पर खून बहाया है। इसलिए राजनीति न केवल आम आदमियों की बल्कि उन पुरुषों की भी अखाड़ा रही है जो कठोर और क्रूर व्यवहार करते हैं। राजनीति पुरुषों की शारीरिक शक्ति और इससे उत्पन्न होने वाले अहंकार के साथ सक्रिय रही है। इसलिए, राजनीति में तुलनात्मक रूप से नरम स्वभाव की महिलाओं की भागीदारी पूरी दुनिया में कम रही है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व के इतिहास में एक अपवाद रही है। स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं की राजनीति में भागीदारी के प्रतिशत में उत्तरोत्तर सुधार हुआ है। सबसे पहले, लैंगिक समानता के सिद्धांत को भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्यों और निर्देशक सिद्धांतों में प्रस्तावित किया गया है। संविधान ने न केवल महिलाओं को समानता का दर्जा दिया है, बल्कि महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने के लिए राज्य को सशक्त बनाया है। जिसकी आज जरूरत भी है। अन्य क्षेत्रों में, महिलाओं को अपने प्रभुत्व को स्थापित करते हुए एक ऊर्जावान और ठोस तरीके से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। राजनीति के नए आयाम बनाए जा रहे हैं जिसमें महिलाओं को समान रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है, भले ही वह पंचायती स्तर पर ही क्यों न हो। गाँव के सरपंच ने कई पंचायत स्तर के चुनावों में महिला उम्मीदवारों को जीता और उन्नति के नए द्वार खोले।

शब्द कुंजी—भारतीय समाज में महिलाओं की भागीदारी, भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका, भारत में महिला मतदाताओं की स्थिति, सक्रिय राजनीति में महिलाओं की स्थिति, पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी,





## शिक्षा के मूल्य प्रदान करने की दिशा में शिक्षण संस्थानों में शिक्षक छात्र संबंधों का विकास

Mrs. Pratibha Kumari, Assistant Professor, Reresearch Scholar

Dr. S.P. Dwivedi, Principal, Ex Sodh Supervisor, Basundhara Teachers Training College, Muzaffarpur, Bihar

Dr Mamta Sharma, Professor, Sodh Supervisor, Sunrise University, Alwar

## सारांश

शिक्षा के विकास के लिए विभिन्न बुनियादी सुविधाओं, टीएलएम, प्रभावी शिक्षण विधियों आदि की आवश्यकता है, जो इसे एक शानदार सफलता बना सकते हैं। सर्वशिक्षा अभियान के कार्यान्वयन के तहत, अधिकतम प्राथमिक विद्यालय अपनी न्यूनतम जरूरतों को पूरा कर सकते थे और पहले की स्थिति की तुलना में अच्छे परिणाम देने में सक्षम थे। यह अध्ययन अनुसंधान का अवलोकन प्रदान करता है जो भारत में विभिन्न दूरस्थ शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों में मुक्त शैक्षिक संसाधनों की स्थिति और उपयोग की पड़ताल करता है। सीखने के संसाधन संपूर्ण शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा हैं। सीखने के संसाधन को शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के किसी भी तत्व या घटक के रूप में संदर्भित किया जा सकता है जो सीखने और छात्रों की धारणा और ध्यान को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोग किया जाता है। प्रशिक्षण संस्थानों (2009) के अनुसार, एक शिक्षण संसाधन सीखने के उद्देश्य के लिए शिक्षकों या छात्रों द्वारा सीखने के लिए या विशेष रूप से डिजाइन किए गए संसाधनों के लिए उपयोग किए गए किसी भी संसाधन को संदर्भित कर सकता है। पिछले कुछ दशकों में, शिक्षण विधियों में और डिजिटल प्रौद्योगिकियों पर आधारित नए प्रकार के संसाधनों की उपलब्धता और खर्च में बड़े बदलाव हुए हैं। प्राथमिक विद्यालयों के गुणवत्ता विकास के लिए भी, शिक्षकों के शिक्षण कौशल और दक्षताओं को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था करने का प्रयास किया। इसलिए, वर्तमान समय में, राज्य में एसएसए कार्यक्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इसने कितनी प्रगति हासिल की है और सभी बच्चों द्वारा इसे प्राप्त करने के लिए प्राथमिक शिक्षा के संबंध में क्या अन्य समस्याएं हल की जानी हैं। इस तरह के अध्ययन के निष्कर्षों के साथ, यह राज्य में प्राथमिक शिक्षा के विकास में सहायक होगा।

मुख्यशब्द: शिक्षा, प्रशिक्षण संस्थान, शिक्षक छात्र संबंध, विद्यालयों के गुणवत्ता विकास

## प्रस्तावना

उच्च शिक्षण उपलब्धि के लिए योगदानकर्ता के रूप में अच्छे शिक्षक छात्र संबंधों के महत्व को प्रदर्शित करने वाला अनुसंधान मजबूत है। लेकिन छात्रों के साथ अच्छे संबंध विकसित करने के लिए शिक्षक क्या कर सकते हैं। यह कम वेल्डेड है। यह अध्ययन एक नए चिंतनशील अभ्यास उपकरण के अनुप्रयोग के माध्यम से छह शिक्षकों के संबंधपरक रणनीतियों की खोज करके इस शोध अंतराल को भरने में योगदान देता है। आत्म में अन्य का समावेश यआईओएसए मानचित्र। शिक्षकों ने छह महीने की अवधि में तीन साक्षात्कारों की एक श्रृंखला में छात्रों के एक समूह के साथ अपने संबंधों की गुणवत्ता जांच करने के लिए उपकरण का उपयोग किया। निष्कर्षों को छह मामलों के अध्ययन और एक क्रॉसकेस विश्लेषण में प्रस्तुत किया गया है जो मौजूदा शोध के मद्देनजर शिक्षकों की संबंधपरक रणनीतियों पर चर्चा करता है। अच्छे शिक्षक छात्र संबंधों को विकसित करने की मुख्य रणनीति छात्रों को अकादमिक हॉलवे और स्कूल के बाहर भी छात्रों ने बातचीत में आकर्षक ज्ञान के माध्यम से यह ज्ञान प्राप्त किया। परिणामों से पता चलता है कि शिक्षकों ने मुख्य रूप से उन छात्रों के साथ अच्छे संबंध बनाए जिन्होंने उनके साथ संपर्क शुरू किया। नतीजाने यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने सभी छात्रों के साथ कक्षा में संबंधिक असमानता को रोकने के लिए संपर्क करने की अपनी जिम्मेदारी के बारे में जानते हों। यह अध्ययन बताता है कि ओईआएस मानचित्र जैसे सरल चिंतनशील अभ्यास में संलग्न होने से शिक्षकों को उन छात्रों की पहचान करने में मदद मिल सकती है जिनके साथ उन्हें अधिक बातचीत करने की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन में शिक्षकों ने करीबी शिक्षक छात्र संबंधों में 17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज किए जिसका श्रेय उन्होंने आंशिक रूप से मानचित्र के अपयोग को दिया, जिससे वे छात्रों के साथ अपने संबंधों के बारे में अधिक जागरूक हुए। केस स्टडीज और मानचित्र ऐसे उपकरण हैं जिनका उपयोग स्कूलों में संबंधपरक रणनीतियों और व्यवहार प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में किया जा सकता है।

यह अध्ययन विश्व स्तर पर छात्रों के बीच कम सीखने की उपलब्धि की समस्या से संबंधित है। विकसित देशों के आंकड़े बताते हैं कि 15 वर्षीय बच्चों को 19 प्रतिशत पांच छात्रों में से एक बुनियादी साक्षरता कौशल यओईसीडीए 2012 प्राप्त नहीं करता है। तुलनात्मक रूप से कई विकासशील देशों आधे से कम छात्र पढ़ सकते हैं





## ICT in Education: Possibilities and Challenge

<sup>1</sup> Dr. Rashmibala, <sup>2</sup> Dr. Sheo Prakash Dwivedi

<sup>1</sup>Asst. Professor, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur, Bihar

<sup>2</sup> Principal, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

### INTRODUCTION

Communication Technology is an important instrument that can transfer the present isolated, teacher-centered and book-centered learning environment into a student-centered environment, the author avers that ICT can change the traditional concept of learning process. 21st century is the age of Information and communication Technology (ICT). All ICT is in the teaching-learning process. The teacher and learner must gain access to technology for improving learning outcomes. Educational reform includes successful designing and implementation of ICT in the teaching-learning process, which is the key to success. There is a rapid shift of educational technologies and political force, so as to shape the structure of the system of education across the globe. Efforts must be made by the educationists to change the process of teaching-learning in order to prepare the students to adjust themselves to the society, which is rich in information and technology. Information and communication Technology is an important instrument which can transfer the present isolated, teacher-centered, book-centered learning environment into a rich student-centered environment. This new learning environment developed by the ICT is called interactive Learning Environment. ICT is a new paradigm of the teaching Learning process; we must accept the new technology and use ICT as a tool of teaching learning process. ICT aims at transferring the old traditional paradigm of learning to the new paradigm of learning.

### CHANGE OF SCENARIO

Traditionally learning was hard, based on deficit model of student, and process of transfer, and reception was individualized and facilitated by division of content into small units and a linear process. But introduction of ICT into the teaching learning process has changed the traditional concept. ICT defines learning as neutral, social, active, linear or non-linear, integrative and contextualized based on ability and strength of the student. Hence, use of ICT in the teaching-learning environment can bring a rapid change in society. It has the potential to transform the nature of education, i.e. where and how learning takes place and role of learners and teacher in the process of learning. It is essential that teachers must have basic ICT skills and competencies. It is for the teacher to determine how ICT can best be used in the context of culture, needs and economic conditions. Educational institutions need to develop strategies, plan to improve the teaching-learning process and ensure that all teachers are well prepared to use the new

### CHALLENGES TO ICT

It is essential to integrate ICT in curriculum of teacher education so as to prepare teachers for the future.

#### A. KNOWLEDGE AND SKILL NEEDED TO USE ICT EFFECTIVELY

The teacher educators must have sufficient knowledge and skill to use ICT in delivering a lesson. They need to develop their transactional strategies so as to meet the need and demands professional development of teacher educator. In the context of ICT professional development includes:- 1. Transactional strategies. 2. Access to technology 3. Time and support 4. Ongoing development (recurrent training) 5. Training through small groups 6. Variety of options

#### B. LEVEL OF READINESS TO INTEGRATE TECHNOLOGY INTO CURRICULUM

Teacher educator should be in a position to couple the technology with new teaching learning approaches so as to improve the learning of students. ICT can improve the standard of education and learning of students. The challenge confronting our system of education is how to transform the curriculum and teaching process so that students can perform effectively in a dynamic, information rich and continuously changing environment. ICT can the traditional concept of learning process and develop new processes based on digital technology. It can definitely create a new learning environment and information-rich society. It is essential to redefine the role and responsibility of students to meet the challenges of ICT in 21st Century. This is nothing but student centered learning. Educational instructions all over the Globe encountering challenges with regard to the effecting application of ICT in the teaching learning process, particularly in the programme of teacher education, i.e.

*Principal*  
Basundhara Teachers  
Training College, Sitait  
Muzaffarpur, Bihar

*Member*  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur





## Aloe Vera: A Plant for Many Uses

<sup>1</sup>Dr. Rashmibala, <sup>2</sup>Dr. Sheo Prakash Dwivedi

<sup>1</sup>Asst. Professor, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

<sup>2</sup>Principal, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

### ABSTRACT

Aloe Vera is an important medicine plant from liliaceae family with African origin. About 300 Species have been described in the geniuses Aloe. Aloe Vera consists of two words "aloe" is Latin word of "Truth". Aloe Vera is known as "wonder Plant" and "Miracle Plant" because its extract produces a Sedative reaction that kills bacteria and increase local microcirculation and is used in wound healing. it has 99% of water and contains polysaccharides which act as moisturizers, so it is also useful for making many beauty products, Aloe Vera, a cactus-like plant has been used for traditional medicine purpose for thousands of years. Aloe Vera leaves can be separated into two basic products, the latex, a bitter yellow liquid beneath the epicorm of the leaf and the gel a colorless and tasteless substance in the inner part of the leaf, Both of them have many biologically active components, scientific studies provide support for the application of Aloe Vera in cosmetic moisturizers, toothpastes, etc, food as flavoring compounds or preservative of fresh product and in medicine of human and animals. Aloe Vera seems to treat a variety of conditions because of its immunity, antidiabetic, antioxidant, laxative antibacterial, Antifungal, Antiviral and antitumor effects. Besides these applications it can be also included in the animal diet to utilize their benefits to the maximum extent.

**Keywords:** - Aloe Vera, Cosmetic, Applications, Food Application Medicinal application, animal, nutrition.

### Introduction

Aloe Vera has been used by mankind for thousands of year in folk medicine for therapeutic properties specially on skin. The Greek philosopher Aristotle wrote about the beneficial medicinal effect of aloe vera. The Species was first described by Carl Linnaeus in (1753) most of the Aloe plant are not toxic, but a few are extremely poisonous, aloe Vera which is considered to be the most potent and their fore the most popular also widely grown as an ornaments plant. It is grow in moist, Subtropical and tropical, location.

Aloe vera is cactus like plants although is relegated to the onion, Garlic and as pursues. it is seamless with triangular, Fleshy; Leaves ranging in color from gray-green to bright green and in the margin to the leaves has small white teeth. The leaves are composed of three layers an inner gel a yellow sap and the outer thick layer of 15-20 cells called as ring. Aloe Leaves have long been used for medical and cosmetics purpose as well as health, Foods, According to often researchers Aloe Vera can be separated into two basic products, latex and gel. The latex representing approximately 20-30 % by weight of the Whole leaf referred as "Aloe Juice" or "Aloe sap" on the other hand the colorless tasteless gel is the pulp or mucilage from the parenchyma cell of the plant in the inner part of leaf. The leaf pulp of Aloe Vera contained 98.5 % water and its alcoholic insoluble portion was mucilage containing organic acid fructose, Hydrolysable sugars and enzyme.

### Chemical compounds found in Aloe vera:-



There are more than 200 compounds found in Aloe vera, About 75 of which have Biological Activity. Aloe Vera leaves contain a Diverse array of compound include Enzymes, Glycosides, Chromones, Carbohydrates Proteins, Glycoprotein's, Amino acid, Organic acid lipids sugars, vitamins and minerals. Aloe Vera latex is high in anthraquinones, phenolic compounds that have strong laxative effect while they can act also as antibacterial especially

Principal  
Basundhara Teachers  
Training College, Sitou  
Muzaffarpur, Bihar

Member  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur





# New Education Policy 2020 Paradigm Shift in Education

**Dr. Sheo Prakash Dwivedi**

Principal,

Basundhara Teachers' Training College

Dr. U S Roy Knowledge Park

Silout, Near Markan Chowk

N.H – 28, Muzaffarpur (Bihar)

Pin – 843119

## Abstract:

The Indian education system had not seen any major reform since a long time. The students had only few career options like medical Engineering or law. Their though had limited to restricted area and was chained to the limited boundaries. It became important to free them from the tailor made ideas and thought and inculcates creative and innovative thinking in students. For bringing a great change, National education policy 2020 come into existence after 35 year of long time with new ideas and innovation under the chairmanship of K Kasturiranjn. It is a comprehensive document which envisaged of quality education that covers to ECCE, school education and Higher Education. The Indian education system had not seen such a great reform. And most importantly it is a comprehensive policy that aims to make India knowledge superpower by equipping its students and teachers with the great knowledge, abilities and skills. The NEP 2020 covers the entire educational structure from primary education to higher education, vocational education, teacher education and adult education. It envisaged for some transformational reforms in the Indian education system. It talks about the education system that lays emphasis on experiential learning along with a focus on 21st-century skills like critical thinking, problem-solving, etc,

**Keywords:** Education, NEP2020, Innovative pedagogy, critical thinking, creative thinking, Experiential learning, multidisciplinary approach, multilingualism, Assessment, Integrated pedagogies

*Sheo Prakash Dwivedi*  
Principal  
Basundhara Teachers  
Training College, Silout  
Muzaffarpur, Bihar

*Manish*  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur



## किशोरों की संवेगात्मक परिपक्वता पद अभिभावक-बालक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिव प्रकाश द्विवेदी

प्राचार्य, बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार  
Email- dr.spdwivedi1@gmail.com

**सारांश :** आज का बालक कल का नागरिक है जिसे आने वाले समय में देश की बागडोर सम्हालना है। देश व समाज की प्रगति के लिये आवश्यक है कि बालक के समुचित विकास पर जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं से ही अत्यधिक ध्यान दिया जाये। विकास की सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोर के आवेग एवं संवेग अत्यधिक तेजी से परिवर्तित होते हैं फलस्वरूप किशोरों के व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है। व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का महत्व सर्वाधिक है। अभिभावकों के स्नेह से वंचित ऐसे बालक जिन्हें स्नेह व प्यार नहीं मिला है वह आक्रामक, निर्दयी, कुसमायोजित, झगड़ालू हो जाते हैं जो कि परिवार, समाज व राष्ट्र के लिये समस्यात्मक बन जाते हैं। किशोरों में तीव्र गति से बढ़ रही संवेगात्मक असंतुलन की समस्या एवं लक्ष्यहीनता आज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों के समक्ष एक चुनौती बन गई है। उद्देश्य 1. किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना। 2. किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना। 3. किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन करना। चर-स्वतंत्र चर: अभिभावक-बालक सम्बन्ध। परतंत्र चर: संवेगात्मक परिपक्वता। परिकल्पना- 1. किशोर बालकों की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता है। 2. किशोर बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता है। 3. किशोर बालक-बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता पर अभिभावक-बालक सम्बन्ध का प्रभाव नहीं पाया जाता है। मापन के उपकरण 1. अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति प्रश्नावली (पी.ए.आर.क्यू.) - रोहनर पी. रोनाल्ड, भारतीय अनुकूलन, डॉ. जयप्रकाश। 2. संवेगात्मक परिपक्वता मापनी (ई.एम.एस.) - यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव। निष्कर्ष 1. स्वीकृत बालकों में अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा संवेगिक अस्थिरता, सामाजिक कुसमायोजन, व्यक्तित्व विघटन तथा नेतृत्व हीनता कम है जबकि सांवेगिक दमन में स्वीकृत तथा अस्वीकृत समूह के बालकों में सार्थक अंतर नहीं है। 2. बालिकाओं की संवेगात्मक परिपक्वता के परिणामों में स्वीकृत बालिकाओं में अस्वीकृत बालिकाओं की अपेक्षा सांवेगिक अस्थिरता, सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन व्यक्तित्व विघटन कम मात्रा में है जबकि स्वीकृत एवं अस्वीकृत बालिकाओं की नेतृत्वहीनता में सार्थक अंतर नहीं है। 3. बालक तथा बालिकाओं के संयुक्त परिणामों में स्वीकृत बालक-बालिकाओं में अस्वीकृत बालक तथा बालिकाओं की अपेक्षा संवेगात्मक अधिक मात्रा में पाई गई।

**कुंजी शब्द :** किशोरों की संवेगात्मक, परिपक्वता पद, अभिभावक-बालक सम्बन्ध, सम्बन्धों के प्रभाव

### 1. प्रस्तावना:

आज का बालक कल का नागरिक है जिसे आने वाले समय में देश की बागडोर सम्हालना है। देश व समाज की प्रगति के लिये आवश्यक है कि बालक के समुचित विकास पर जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं से ही अत्यधिक ध्यान दिया जाये। विकास की सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोर के आवेग एवं संवेग अत्यधिक तेजी से परिवर्तित होते हैं फलस्वरूप किशोरों के व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है। व्यक्तित्व निर्माण में परिवार का महत्व सर्वाधिक है। परिवार में उसे सुरक्षा मिलती है, अभिभावकों के साथ उनके अच्छे सम्बन्धों से उसे आत्मविश्वास एवं आत्मबल की ऊर्जा मिलती है। अभिभावकों की स्वीकृत अभिवृत्ति किशोरों में सकारात्मक मूल्यों को स्फुटित करती है तथा उनकी अस्वीकृति किशोरों में नकारात्मक मूल्यों को जन्म देती है। सकारात्मक मूल्य किशोरों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करते हैं तथा नकारात्मक मूल्य विग्रह एवं तनाव पैदा करते हैं। अभिभावक-बालक सम्बन्ध जितने सरल, सुदृढ़ होते हैं बालक उतना ही अपने आपको सहज पाते हैं।

हमेशा से ही प्रत्येक समाज को विकसित होने के लिए एक अच्छे एवं सांवेगिक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की आवश्यकता रही है जिससे वे समाज व राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें क्योंकि संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति ही जीवन की हर कसौटी पर खरा उतर सकता है। सिन्हा एस. पी. एवं माथुर के. (1990) ने अभिभावकीय स्वीकृति-अस्वीकृति का बालकों की





## ध्यान एवं प्राणायाम का एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन

**डॉ0शिव प्रकाश द्विवेदी**

प्राचार्य

बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज  
मुजफ्फरपुर बिहार

**डॉ0 रश्मि बाला**

सहायक प्राध्यापिका

बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज  
मुजफ्फरपुर बिहार

### एबैस्ट्रैक

मानव ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार माना जाता है। इस अनुपम उपहार की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का पावन कर्तव्य है। प्राणायाम अथवा योग वस्तुतः प्राचीन भारतीय अनुसंधान का परिणाम है। अतः योग साधना के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में न केवल वृद्धि किया जा सकता है बल्कि दीर्घजीवी जीवन अपनाया जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य शारीरिक मानसिक भावनात्मक बौद्धिक, आध्यात्मिक सभी स्तरों पर व्यक्तित्व का विकास करना होता है। अर्थात् एक ऐसी साधना है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। छात्र जीवन में तो इसका सर्वाधिक महत्व है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मन पर नियंत्रण करना महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्तमान समय में अधिकांश छात्र-छात्राएँ आधुनिक सभ्यता चलचित्रों व दूरदर्शन तथा फैशन के घातक प्रभाव के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं अतः छात्र-छात्राओं के तनम न के संतुलित विकास के लिए योग शिक्षा अति आवश्यक है अतः इसके अभ्यास से शरीर एवं मन के समस्त विकार दूर हो जाते हैं। योग साधना के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकारों का शोधन, परिमार्जन एवं मार्गान्तीकरण स्वभाविक रूप से होता है। जिससे व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन्नतिशील होता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में इसका अभाव है और परिणाम भी सामने है अनुसंधान की दृष्टि से योग साधना की प्रभाव शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर साकारात्मक रूप से पड़ता है। इसके द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकारों को दूर किया जा सकता है। शरीर और मन को स्वस्थ रखने। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि की अनुसरण किया। इसके अन्तर्गत दो समूह बनाये गये। 1- प्रयोगात्मक समूह 2- नियन्त्रित समूह मुजफ्फरपुर बिहार के एम0एड0 के 100 शिक्षार्थियों को अध्ययन हेतु यादृच्छित विधि चयनित किया गया। इसमें 50 शिक्षार्थी प्रयोगात्मक समूह और 50 शिक्षार्थियों नियन्त्रित समूह में सम्मिलित किये गये। उपकरण:-1- शारीरिक स्वास्थ्य परीक्षण माला स्वयं निर्मित 2- सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण डा0 के0 एस0 मिश्रा एवं डा0 एस0के0पाल 3- मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण डा0 अरुण कुमार सिंह, अल्पना सेन गुप्ता उद्देश्य:-1- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले एवं भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन 2- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। 3- ध्यान और प्राणायाम क्रिया में भाग लेने वाले और भाग न लेने वाले शिक्षार्थियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन परिकल्पना:-ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया में भाग लेने एवं भाग न लेने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परिणाम प्राप्त हुए 1- ध्यान एवं प्राणायाम में भाग लेने एवं न लेने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता में सार्थक अंतर पाया गया 2- दोनों समूहों के सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। 3- दोनों समूहों की एम0एड0 शिक्षार्थियों की स्वायत्तता में सार्थक अंतर पाया गया। 4- दोनों समूहों की सुरक्षा और असुरक्षा में सार्थक अंतर पाया गया। 5- दोनों समूहों के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया। 6- दोनों समूहों की बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर पाया गया। 7- दोनों समूहों के सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया। 8- दोनों समूहों के सम्पूर्ण शारीरिक क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः ध्यान एवं प्राणायाम क्रिया करने वाले एम0एड0 शिक्षार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी पक्षों का विकास पूर्ण एवं अबोध गति से होता है। इस प्रकार ध्यान एवं प्राणायाम अच्छे शारीरिक एवं



**CHANGING ROLE OF TEACHER IN 21<sup>ST</sup> CENTURY****<sup>1</sup>Dr.Rashmibala and <sup>2</sup>Dr. Sheo Prakash Dwivedi**<sup>1</sup>Assistant Professor and <sup>2</sup>Principal<sup>1&2</sup>Basundhara Teachers' Training College  
Muzaffarpur, Bihar, India**ABSTRACTS**

In the information technology age, it can be hard to get a grip on the evolving roles of teachers. On one hand, it can seem as if the role of teachers has grown immensely; they are now expected to be tech-savvy, computer literate and at the cutting edge of education. On the other hand, it can seem as if technology makes the traditional role of the teacher largely obsolete. This, however, is not quite true; rather, teachers must keep their traditional devotion to students and hands-on interaction while teaching students how to navigate their 21<sup>st</sup> century world. Teaching in the 21<sup>st</sup> century has to require an emphasis on understanding how to use information technologies. Students always need mentors, both inside and outside of the classroom. Arguably, this is true of today more than ever before, as school violence, drug abuse and other dangers have been becoming more and more common. Teachers in the 21<sup>st</sup> century confront the challenges opened up by globalization. Effective teaching has to be fluid and adaptive to current culture. This requires an art and a science to teaching that makes the teacher of the 21<sup>st</sup> Century effective. The effective teacher will connect the art and science of teaching to make the learning environment relevant and applicable for her students. In the end, the teacher will thrive and the students will flourish when the role of the teacher adapts to the needs of culture of today.

**Keyword:** Teacher, Chang of Role, 21<sup>st</sup> Century.**Introduction**

"A poor teacher tells, An average teacher explains, A good teacher demonstrates, And a great teacher inspires."

In the information technology age, it can be hard to get a grip on the evolving roles of teachers. On one hand, it can seem as if the role of teachers has grown immensely; they are now expected to be tech-savvy, computer literate and at the cutting edge of education. On the other hand, it can seem as if technology makes the traditional role of the teacher largely obsolete. This, however, is not quite true; rather, teachers must keep their traditional devotion to students and hands-on interaction while teaching students how to navigate their 21<sup>st</sup> century world.

**Emphasis on Technology**

- Teaching in the 21<sup>st</sup> century has to require an emphasis on understanding how to use information technologies. Teachers need to instruct students on computer usage, legitimate methods of Internet research, and how to identify useful information. Additionally, this focus on technology can open up a world of new resources to support traditional teaching methods, such as the incorporation of software programs in the classroom.

**Traditional Goals with New Resources**

- The traditional goals of education remain the same. Teachers want to help form their students into effective critical thinkers and life-long learners with a strong sense of their social responsibilities. While information technology can sometimes seem like a deterrent rather than an ally in reaching these goals, they can also be effectively employed to help facilitate rather than disrupt the learning process; for example, students can use social networking tools to construct opinion polls, or Internet search engines to conduct research.

**Emphasis on Techniques**

- Teachers in the 21<sup>st</sup> century have access to a host of cutting-edge research about how students learn. They should be knowledgeable and willing to apply such research to their classroom. They should understand different learning styles and be able to identify the learning styles of their students.

**As Mentors**

- Students always need mentors, both inside and outside of the classroom. Arguably, this is true of today more than ever before, as school violence, drug abuse and other dangers have been becoming more and more common. Teachers need to take their role as both a resource for students and as a guide through the difficulties of life seriously, and should strive to foster healthy relationships with their students.

**Emphasis on Action**

- Teachers in the 21<sup>st</sup> century confront the challenges opened up by globalization. Teachers should introduce students to their world, and moreover inculcate in them a sense of their own power to create change in the world. Teachers should not just transmit





## **ICT in Education: Possibilities and Challenge**

**<sup>1</sup> Dr. Rashmibala, <sup>2</sup> Dr. Sheo Prakash Dwivedi**

<sup>1</sup> Asst. Professor, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur, Bihar

<sup>2</sup> Principal, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

### **INTRODUCTION**

Communication Technology is an important instrument that can transfer the present isolated, teacher-centered and book-centered learning environment into a student-centered environment, the author avers that ICT can change the traditional concept of learning process. 21st century is the age of Information and communication Technology (ICT). All ICT is in the teaching-learning process. The teacher and learner must gain access to technology for improving learning outcomes. Educational reform includes successful designing and implementation of ICT in the teaching-learning process, which is the key to success. There is a rapid shift of educational technologies and political force, so as to shape the structure of the system of education across the globe. Efforts must be made by the educationists to change the process of teaching-learning in order to prepare the students to adjust themselves to the society, which is rich in information and technology. Information and communication Technology is an important instrument which can transfer the present isolated, teacher-centered, book-centered learning environment into a rich student-centered environment. This new learning environment developed by the ICT is called interactive Learning Environment. ICT is a new paradigm of the teaching Learning process; we must accept the new technology and use ICT as a tool of teaching learning process. ICT aims at transferring the old traditional paradigm of learning to the new paradigm of learning.

### **CHANGE OF SCENARIO**

Traditionally learning was hard, based on deficit model of student, and process of transfer, and reception was individualized and facilitated by division of content into small units and a linear process. But introduction of ICT into the teaching learning process has changed the traditional concept. ICT defines learning as neutral, social, active, linear or non-linear, integrative and contextualized based on ability and strength of the student. Hence, use of ICT in the teaching-learning environment can bring a rapid change in society. It has the potential to transform the nature of education, i.e. where and how learning takes place and role of learners and teacher in the process of learning. It is essential that teachers must have basic ICT skills and competencies. It is for the teacher to determine how ICT can best be used in the context of culture, needs and economic conditions. Educational institutions need to develop strategies, plan to improve the teaching-learning process and ensure that all teachers are well prepared to use the new

### **CHALLENGES TO ICT**

It is essential to integrate ICT in curriculum of teacher education so as to prepare teachers for the future.

#### **A. KNOWLEDGE AND SKILL NEEDED TO USE ICT EFFECTIVELY**

The teacher educators must have sufficient knowledge and skill to use ICT in delivering a lesson. They need to develop their transactional strategies so as to meet the need and demands professional development of teacher educator. In the context of ICT professional development includes:- 1. Transactional strategies. 2. Access to technology 3. Time and support 4. Ongoing development (recurrent training) 5. Training through small groups 6. Variety of options

#### **B. LEVEL OF READINESS TO INTEGRATE TECHNOLOGY INTO CURRICULUM**

Teacher educator should be in a position to couple the technology with new teaching learning approaches so as to improve the learning of students. ICT can improve the standard of education and learning of students. The challenge confronting our system of education is how to transform the curriculum and teaching process so that students can perform effectively in a dynamic, information rich and continuously changing environment. ICT can the traditional concept of learning process and develop new processes based on digital technology. It can definitely create a new learning environment and information-rich society. It is essential to redefine the role and responsibility of students to meet the challenges of ICT in 21st Century. This is nothing but student centered learning. Educational instructions all over the Globe encountering challenges with regard to the effecting application of ICT in the teaching learning process, particularly in the programme of teacher education, i.e.

*Rashmibala*  
Principal  
Basundhara Teachers'  
Training College, Sitait  
Muzaffarpur, Bihar

*Manoj*  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur



## Aloe Vera: A Plant for Many Uses

<sup>1</sup>Dr. Rashmibala, <sup>2</sup>Dr. Sheo Prakash Dwivedi

<sup>1</sup>Asst. Professor, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

<sup>2</sup>Principal, Basundhara Teachers' Training, College Muzaffarpur Bihar

### ABSTRACT

Aloe Vera is an important medicine plant from liliaceae family with African origin. About 300 Species have been described in the genuses Aloe. Aloe Vera consists of two words "aloe" is Latin word of "Truth". Aloe Vera is known as "wonder Plant" and "Miracle Plant" because its extract produces a Sedative reaction that kills bacteria and increase local microcirculation and is used in wound healing. it has 99% of water and contains polysaccharides which act as moisturizers, so it is also useful for making many beauty products, Aloe Vera, a cactus - like plant has been used for traditional medicine purpose for thousands of years. Aloe Vera leaves can be separated into two basic products, the latex, a bitter yellow liquid beneath the epicorm of the leaf and the gel a colorless and tasteless substance in the inner part of the leaf, Both of them have many biologically active components, scientific studies provide support for the application of Aloe Vera in cosmetic moisturizers, toothpastes, etc, food as flavoring compounds or preservative of fresh product and in medicine of human and animals. Aloe Vera seems to treat a variety of conditions because of its immunity, antidiabetic, antioxidant, laxative antibacterial, Antifungal, Antiviral and antitumor effects. Besides these applications it can be also included in the animal diet to utilize their benefits to the maximum extent.

**Keywords:** - Aloe Vera, Cosmetic, Applications, Food Application Medicinal application, animal, nutrition.

### Introduction

Aloe Vera has been used by mankind for thousands of year in folk medicine for therapeutic properties specially on skin. The Greek philosopher Aristotle wrote about the beneficial medicinal effect of aloe vera. The species was first described by Carl Linnaeus in (1753) most of the Aloe plant are not toxic, but a few are extremely poisonous, aloe Vera which is considered to be the most potent and their fore the most popular also widely grown as an ornamentals plant. It is grow in moist, Subtropical and tropical, location.

Aloe vera is cactus like plants although is relegated to the onion, Garlic and asparagus. it is seamless with triangular, Fleshy, Leaves ranging in color from gray-green to bright green and in the margin to the leaves has small white teeth. The leaves are composed of three layers an inner gel a yellow sap and the outer thick layer of 15-20 cells called as ring. Aloe Leaves have long been used for medical and cosmetics purpose as well as health, Foods, According to often researchers Aloe Vera can be separated into two basic products, latex and gel. The latex representing approximately 20-30 % by weight of the Whole leaf referred as "Aloe Juice" or "Aloe sap" on the other hand the colorless tasteless gel is the pulp or mucilage from the parenchyma cell of the plant in the inner part of leaf. The leaf pulp of Aloe Vera contained 98.5 % water and its alcoholic insoluble portion was mucilage containing organic acid fructose, Hydrolysable sugars and enzyme.

### Chemical compounds found in Aloe vera:-



There are more than 200 compounds found in Aloe vera, About 75 of which have Biological Activity. Aloe Vera leaves contain a Diverse array of compound include Enzymes, Glycosides, Chromones, Carbohydrates Proteins, Glycoprotein's, Amino acid, Organic acid lipids sugars, vitamins and minerals. Aloe Vera latex is high in anthraquinones, phenolic compounds that have strong laxative effect while they can act also as antibacterial especially

*Rashmibala*  
Principal  
Basundhara Teachers  
Training College, Sitauli  
Muzaffarpur, Bihar

*Manish*  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur





## शिक्षा के मूल्य प्रदान करने की दिशा में शिक्षण संस्थानों में शिक्षक छात्र संबंधों का विकास

**Mrs. Pratibha Kumari**, Assistant Professor, Reresearch Scholar

**Dr. S.P. Dwivedi**, Principal, Ex Sodh Supervisor, Basundhara Teachers Training College, Muzaffarpur, Bihar

**Dr Mamta Sharma**, Professor, Sodh Supervisor, Sunrise University, Alwar

### सारांश

शिक्षा के विकास के लिए विभिन्न बुनियादी सुविधाओं, टीएलएम, प्रभावी शिक्षण विधियों आदि की आवश्यकता है, जो इसे एक शानदार सफलता बना सकते हैं। सर्वशिक्षा अभियान के कार्यान्वयन के तहत, अधिकतम प्राथमिक विद्यालय अपनी न्यूनतम जरूरतों को पूरा कर सकते थे और पहले की स्थिति की तुलना में अच्छे परिणाम देने में सक्षम थे। यह अध्ययन अनुसंधान का अवलोकन प्रदान करता है जो भारत में विभिन्न दूरस्थ शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों में मुक्त शैक्षिक संसाधनों की स्थिति और उपयोग की पड़ताल करता है। सीखने के संसाधन संपूर्ण शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है। सीखने के संसाधन को शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के किसी भी तत्व या घटक के रूप में संदर्भित किया जा सकता है जो सीखने और छात्रों की धारणा और ध्यान को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोग किया जाता है। प्रशिक्षण संस्थानों (2009) के अनुसार, एक शिक्षण संसाधन सीखने के उद्देश्य के लिए शिक्षकों या छात्रों द्वारा सीखने के लिए या विशेष रूप से डिजाइन किए गए संसाधनों के लिए उपयोग किए गए किसी भी संसाधन को संदर्भित कर सकता है। पिछले कुछ दशकों में, शिक्षण विधियों में और डिजिटल प्रौद्योगिकियों पर आधारित नए प्रकार के संसाधनों की उपलब्धता और खर्च में बड़े बदलाव हुए हैं। प्राथमिक विद्यालयों के गुणवत्ता विकास के लिए भी, शिक्षकों के शिक्षण कौशल और दक्षताओं को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था करने का प्रयास किया। इसलिए, वर्तमान समय में, राज्य में एसएसए कार्यक्रम के मूल्यांकन की आवश्यकता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इसने कितनी प्रगति हासिल की है और सभी बच्चों द्वारा इसे प्राप्त करने के लिए प्राथमिक शिक्षा के संबंध में क्या अन्य समस्याएं हल की जानी हैं। इस तरह के अध्ययन के निष्कर्षों के साथ, यह राज्य में प्राथमिक शिक्षा के विकास में सहायक होगा।

**मुख्यशब्द:** शिक्षा, प्रशिक्षण संस्थान, शिक्षक छात्र संबंध, विद्यालयों के गुणवत्ता विकास

### प्रस्तावना

उच्च शिक्षण उपलब्धि के लिए योगदानकर्ता के रूप में अच्छे शिक्षक छात्र संबंधों के महत्व को प्रदर्शित करने वाला अनुसंधान मजबूत है। लेकिन छात्रों के साथ अच्छे संबंध विकसित करने के लिए शिक्षक क्या कर सकते हैं। यह कम वेल्डेड है। यह अध्ययन एक नए चिंतनशील अभ्यास उपकरण के अनुप्रयोग के माध्यम से छह शिक्षकों के संबंधपरक रणनीतियों की खोज करके इस शोध अंतराल को भरने में योगदान देता है। आत्म में अन्य का समावेश यआईओएसड मानचित्र। शिक्षकों ने छह महीने की अवधि में तीन साक्षात्कारों की एक श्रृंखला में छात्रों के एक समूह के साथ अपने संबंधों की गुणवत्ता जांच करने के लिए उपकरण का उपयोग किया। निष्कर्षों को छह मामलों के अध्ययन और एक क्रॉसकेस विश्लेषण में प्रस्तुत किया गया है जो मौजूदा शोध के मद्देनजर शिक्षकों की संबंधपरक रणनीतियों पर चर्चा करता है। अच्छे शिक्षक छात्र संबंधों को विकसित करने की मुख्य रणनीति छात्रों को अकादमिक हॉलवे और स्कूल के बाहर भी छात्रों ने बातचीत में आकर्षक ज्ञान के माध्यम से यह ज्ञान प्राप्त किया। परिणामों से पता चलता है कि शिक्षकों ने मुख्य रूप से उन छात्रों के साथ अच्छे संबंध बनाए जिन्होंने उनके साथ संपर्क शुरू किया। नतीजानव यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने सभी छात्रों के साथ कक्षा में संबंधिक असमानता को रोकने के लिए संपर्क करने की अपनी जिम्मेदारी के बारे में जानते हों। यह अध्ययन बताता है कि ओईआएस मानचित्र जैसे सरल चिंतनशील अभ्यास में संलग्न होने से शिक्षकों को उन छात्रों की पहचान करने में मदद मिल सकती है जिनके साथ उन्हें अधिक बातचीत करने की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन में शिक्षकों ने करीबी शिक्षक छात्र संबंधों में 17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज किए जिसका श्रेय उन्होंने आंशिक रूप से मानचित्र के अपयोग को दिया, जिससे वे छात्रों के साथ अपने संबंधों के बारे में अधिक जागरूक हुए। केस स्टडीज और मानचित्र ऐसे उपकरण है जिनका उपयोग स्कूलों में संबंधपरक रणनीतियों और व्यवहार प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में किया जा सकता है।

यह अध्ययन विश्व स्तर पर छात्रों के बीच कम सीखने की उपलब्धि की समस्या से संबंधित है। विकसित देशों के आंकड़े बताते हैं कि 15 वर्षीय बच्चों को 19 प्रतिशत पांच छात्रों में से एक बुनियादी साक्षरता कौशल यओईसीडीए 2012 प्राप्त नहीं करता है। तुलनात्मक रूप से कई विकासशील देशों आधे से कम छात्र पढ़ सकते हैं





## शहरी व ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।

अजय कुमार मौर्य

प्राध्यापक बसुन्धरा टीचर्स ट्रेनिंग कालेज मुजफ्फरपुर बिहार

शोधार्थी

आई0 आई0 एम0 टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0 प्र0)

### एबैस्ट्रेक्ट

आज के इस युग में भारत में स्त्री की समस्या स्त्री और पुरुष के बीच आर्थिक और सामाजिक भेद-भाव वर्तमान व्यवस्था को चुनौती देना आसान है। आज स्त्री अपने विचारों की स्वतन्त्रता के लिए पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था को अपनी प्रतिष्ठा, मेधा, क्षमता के बल पर चुनौती दे रही हैं। आज की महिला चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी अपनी सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक सुरक्षा, संरक्षा तथा स्वतन्त्र अस्तित्व के निर्माण हेतु सजग है और वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति पथ पर अग्रसर है। शोध अध्ययन वर्तमान नारी सशक्तिकरण की वास्तविक समस्या के निदान हेतु उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन कर प्रगतिशील बनाने का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयत्न किया गया है। जिससे निम्न शोध उद्देश्य निर्धारित किये गये: 1. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना। 2. शहरी महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना। 3. शहरी व ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन। जिस पर निम्न शोध परिष्कल्पना 1. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रति उचित दृष्टिकोण का प्रतिपादन न करना। 2. शहरी महिला सशक्तिकरण के प्रति उचित दृष्टिकोण का प्रतिपादन न करना। 3. शहरी व ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के प्रति उचित दृष्टिकोण का प्रतिपादन न करना। को जनसंख्या जौनपुर जनपद के समस्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिलाओं पर अध्ययन करके वर्णनात्मक प्रकृति का एक सर्वेक्षण अनुसंधान स्वनिर्मित महिला सशक्तिकरण दृष्टिकोण मापनी के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त ग्रामीण तथा शहरी महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण में कोई सकारात्मक अन्तर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि महिलाएँ आज भी अपनी सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तरों के लिए संघर्ष कर रही हैं। आज 21वीं सदी में हालांकि पुरुषों के दृष्टिकोण में नारी सशक्तिकरण के प्रति सकारात्मक बदलाव आया है।

कुँन्जी शब्द:—शहरी महिला, ग्रामीण महिला, महिला सशक्तिकरण, शहरी व ग्रामीण महिला का दृष्टिकोण

### प्रस्तावना

आज के इस युग में भारत में स्त्री की समस्या घर और परिवार को लेकर है। स्त्री घर और परिवार को लेकर है। स्त्री घर और परिवार दोनों के उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है। घर और परिवार दो अलग शब्द हैं, किन्तु प्रायः समाज में एक-दूसरे के पर्याय के रूप में इसका प्रचलन है। घर एक बुनियादी संरचना है, जबकि परिवार एक सामाजिक इकाई। इन दोनों इकाईयों के भीतर स्त्री और पुरुष के बीच आर्थिक और सामाजिक भेद-भाव जस के तस है। स्त्री के कामकाज और श्रम सम्बन्धी सम्बन्धी सरकारी परिभाषाएँ जिसमें कहा गया है कि—

“काम की परिभाषा है, ऐसे कार्यों में भागीदारी जो आर्थिक रूप से उत्पादन में जुड़े होंगे।”

“यदि एक पुरुष या स्त्री सिर्फ घर पर काम कर रहे हों या कुछ बना रहे हैं। जिसकी खपत घर में ही होगी (बिक्री के लिए नहीं), तो वे जनगणना की शब्दावली में कोई काम नहीं कर रहे हैं।”

*Basundhara*  
Principal  
Basundhara Teachers  
Training College, Sitohi  
Muzaffarpur, Bihar

*Manu*  
Coordinator  
IQAC  
BTTC, Muzaffarpur





## वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

**अजय कुमार मौर्य**

शोधकर्ता, शिक्षा संकाय आई० आई० एम० टी०, विश्वविद्यालय, मेरठ, उ०प्र०  
सहायक प्रोफेसर, बसुंधरा टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मुजफ्फरपुर, बिहार  
Email - ajaymaurya44037@gmail.com

**डॉ० मुहम्मद जावेद**

शोध निदेशक - प्राध्यापक, शिक्षा संकाय आई० आई० एम० टी०, विश्वविद्यालय, मेरठ।

**सारांश :** समकालीन दुनिया में, मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए जानना आवश्यक हो जाता है कि मूल्य शिक्षा एक बच्चे की स्कूली यात्रा में शामिल है और उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। समकालीन दुनिया में, मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए जानना आवश्यक हो जाता है कि मूल्य शिक्षा एक बच्चे की स्कूली यात्रा में शामिल है और उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

**कुंजी शब्द:** शिक्षा व्यवस्था, मूल्य शिक्षा, मूल्यमीमांसा ।

### 1. प्रस्तावना :

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसी विकास के कारण मानव समस्त प्राणियों की मुकुटमाणि माना गया है। मानव शिक्षा द्वारा ही अपनी वाणी, विवेक, सामाजिकता, सृजनशीलता से विभूषित होता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। यह कार्य मनुष्य के पैदा होते ही शुरू हो जाता है। उस समय वह बोलना, चलना, उठना बैठना कुछ भी नहीं जानता। वह एकदम असामाजिक होता है। परन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वैसे-वैसे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आता है। विद्यालय जाने से पूर्व बालक परिवार एवं समाज से बहुत कुछ सीखता है जिससे उसमें मूल्यों का विकास होता है। सीखने-सिखाने का यह क्रम जीवनपर्यन्त विद्यालय छोड़ने के उपरान्त भी चलता रहता है। मूल्य शिक्षा द्वारा मानव संस्कारित एवं योग्य बनाता है। मूल्य हमें ऐसे दृष्टिकोण की ओर प्रेरित करते हैं, जो हमारे जीवन में मन-मस्तिष्क को स्वच्छता प्रदान करते हैं। मूल्यों के विकास में विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था, शिक्षकों का आदर्श, आपसी सहयोग, बच्चों के प्रति भावनाओं आदि का विशेष महत्त्व है।

### 2. संबंधित साहित्य की समीक्षा :

लक्ष्मी, वी. विजया और पॉल, एम. (2018) ने अपने अध्ययन में मूल्य शिक्षा की परिभाषा, इसकी आवश्यकता, लक्ष्य, उद्देश्य, इसकी अवधारणा को बढ़ावा देना, भारत में इसके विकास, इसे विश्व स्तर पर कैसे पढ़ाया जाता है, के बारे में चर्चा की और इसमें शिक्षकों की भूमिका का भी विश्लेषण किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि मूल्य शिक्षा छात्रों और समाज को प्रभावित करने वाले पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। कई शिक्षक छात्रों के समग्र विकास और वृद्धि को कम महत्व देते हैं। मूल्यों के पर्याप्त समावेश के लिए शैक्षणिक संस्थानों को भी समर्थन देने की आवश्यकता है। छात्रों को सहानुभूति, साझाकरण, तर्कसंगतता, आध्यात्मिकता, तकनीकी योग्यता सीखने के माहौल में बढ़े होने की जरूरत है संचार कौशल आदि और उन्हें इस वैश्वीकृत दुनिया में जीवन के हर चरण और क्षेत्र में आत्मसात करें। पाटिल (2013) ने अपने अध्ययन में समाज में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करने का प्रयास किया। इसमें मूल्य शिक्षा को विकसित करने के निहितार्थों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। इस पेपर में लेखिका द्वारा अपने कॉलेज के छात्रों के लिए प्शंस्कार सर्जन ब्लॉग्स बनाने के प्रयास के बारे में भी चर्चा की गई है। लेखक के



कीर्ति सरस्वती

सहायक प्रोफेसर

स्वच्छता लेचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, मुजफ्फरपुर

प्रस्तावना

*"Philosophy of education is nothing more or less than the application of philosophy to specifically education issues" - Robin Barrow*

समस्त ज्ञान एवं विज्ञान का मूलदर्शन में है दर्शन प्रत्येक समाज तथा जीवन के लिए आवश्यक है। इसके द्वारा प्रत्येक मानव के जीवन मार्ग को प्रशस्त किया जाता है। अतः दर्शन को जानना आवश्यक है। दर्शनशास्त्र सभी विद्याओं का दीपक है, वह सभी कर्मों को सिद्ध करने का साधन है, वह सभी धर्मों का अधिष्ठान है। दर्शन वास्तविक, यथार्थ एवं सार्वभौमिक ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास है मनुष्य उस परम सत्य या यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करने के लिए निरन्तर चिंतन करता रहता है। मनुष्य का यथार्थ ज्ञान प्राप्ति की दिशा में यही कदम 'दर्शन' है।

दर्शनशास्त्र को अंग्रेजी में Philosophy कहते हैं दर्शन शब्द की उत्पत्ति 'दृश' धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है 'देखना'। अपनी इन्द्रियों के द्वारा मनुष्य सभी दिखाई देने वाली वस्तुओं को देख लेता है लेकिन गूढ़ अथवा अमूर्त विषयों के बारे में वह अपने तर्क और अन्तर्दर्शन अथवा चिन्तन से ही देख पाता है। एक कथनानुसार "दृश्यते यथार्थतत्त्वमनेव इति दर्शनम्" अर्थात् जिससे यथार्थ तत्त्व को देखा जाय वही दर्शन है। यह विश्व तथा उसमें व्याप्त यथार्थताओं को देखने की कला व विज्ञान है। हम विश्व को उसी ढंग व रूप में देखते हैं जैसी हमारी भावनाएँ व मनोदशाएँ होती हैं। इस प्रकार दर्शन हमारी मनोदशा तथा भावनाओं को भी प्रतिबिम्बित करता है।

दर्शन का अंग्रेजी Philosophy होता है। Philosophy शब्दों के मूल से बना है Philos + Sophia जिसमें Philos का अर्थ 'प्रेम' (Love) तथा Sophia जिसका अर्थ है 'ज्ञान' या 'विद्या' (Knowledge or wisdom) इस प्रकार Philosophy शब्द का अर्थ है 'विद्या या ज्ञान से प्रेम (Love of wisdom)

दर्शन वहीं से प्रारंभ होता है जहाँ विज्ञान का अन्त होता है विज्ञान को ज्ञान कहा जा सकता है विज्ञान स्वतः सिद्ध कल्पनाओं को मानकर अपने समस्त को उन पर आधारित करता है इस सन्दर्भ में आर्थर शमसन का विचार है कि - "विज्ञान बहुत ही साधारण शब्दों में अनुभव की घटनाओं एवं तथ्यों का सम्पूर्ण और अनुकूल वर्णन है"। विज्ञान स्वतः सिद्ध कल्पनाओं को मानकर अपने समस्त ज्ञान को उन पर आधारित करता है विज्ञान और दर्शनशास्त्र दोनों का एक ही लक्ष्य है ज्ञान की प्राप्ति। इसलिए उनमें कृत् ही घनिष्ठ सम्बन्ध है।

शब्द कुञ्जी- गूढ़, इन्द्रियों, अमूर्त, अन्तर्दर्शन, प्रतिबिम्बित, कल्पनाओं, तथ्यों, चिन्तन

  
Principal  
Basundhara Tewahets  
Training College, Sitohi  
Muzaffarpur, Bihar

  
Member  
Coordinator  
IOAC  
BTTC, Muzaffarpur